Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-

THE PRITHVÍRÁJ RASO

OF

CHAND BARDÂI

VOL V.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTOS LXII-LXVI.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

पांचवां भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ६२-६६

PRINTED BY PT. BAIJNATH JIJJA, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1912.

सूचीपत्र।

(६५) बिवाह सम्यो।
(पृष्ठ २१०३ से २१०४ तक)

(६६) बड़ी लड़ाई रो प्रस्ताव
(पृष्ठ २१०५ से २३८५ तक)

शुक चरित्र प्रस्ताव

[बासठवां समय]

सुख विलास वर्णन।

अरिल्ल॥ उत्तर पष्प अषाढ पवित्त। आर्द्र मंडल मंडि नषित्त॥
दान अंग फल द्रुहु लहि गत्तिय। विलसन राज करै नव नित्तिय॥
छं०॥ १॥

पृथ्वीराज की मदान्धता।

कवित्त॥ इक जोवन धन मद्द। मद्द राजन मद वारुनि॥
अरु मद देह अरोज। संग नव वनिता तारुनि॥
अरु बंधन पति साह। पैज कनवज्ज सँपूरिय॥
एते मद राजनं। दुष दंदह करि दूरिय॥
आनंद कंद उमगे तनह। संजोगी सर हंस सरि॥
जानै न राज अत्तम उदय। महि जोवन मानै सु परि॥छं०॥ २॥

पृथ्वीराज का अंतर महल में सभा करना और संयोगिता को अर्द्ध आसन देना॥

आर्या॥ आषाढे मासे दुतियानं। राज सभा मंडिय महिलानं॥
सं इंछिनि दच्छिन पामारी। सील सुद्ध पति व्रत सँचारी॥
छं० ॥ ३॥

मुक्को मा जदि पुत्ति पँगानी। न्याय वट्ट प्राया प्रीयानी॥
सिंघासन राजन सन्मानी। कैलासी लच्छिय इह दानी॥
छं० ॥ ४॥

(१) कृ. को.-दिवस। (२) मो.-दामी।

बूंटे प्रेम सु ग्रीय कौ। अंतर दभ्भै आप ॥ छं० ॥ १८ ॥

एक दिन संयोगिता का सब रानियों का न्योता करना।

एक दिवस संजोगि गृह। महमानिय सब सौति ॥
आनि सुष्ष प्रगटन मछर। अधिक [1]सपतनी होति ॥ छं० ॥ १९ ॥
सौति सुहागिनि सुष्ष दिषि। लग्गे नैन अंगार ॥
ज्यों ज्यों वह दंदा करै। त्यौं त्यौं करवत धार ॥ छं० ॥ २० ॥
*धन ग्रह बंधन मुत्ति नग। हेम पटंबर सार ॥
पुनि चिंथ प्रिय बंधन सुरति। लगै अधिक यंग धार ॥ छं० ॥ २१ ॥

सुग्गे की चातुरी का वर्णन।

लघुनराज ॥ अयं महे मयं जुरी। प्रसाद प्रेम मंजुरी ॥
उछंम पाट पानयं। सगुन्न कीर आनयं ॥ छं० ॥ २२ ॥
सनूर निड्ड वासयं। प्रतीति रीति दासयं ॥
करं जु बंद मुंदरी। नरम्म द्रष्टि मंजुरी ॥ छं० ॥ २३ ॥
निगम्म वेद बादयं। बरन्न आदि सादयं ॥
सु चातुरी चितं चढं। पुछंति कीरयं पढं ॥ छं० ॥ २४ ॥
निरम्म रूप निड्डयौ। तिलक सोर सड्डयौ ॥
जुवत्ति रीति जानयं। हरम्य तुष्ट मानयं ॥ छं० ॥ २५ ॥

रानी इछनी का पिंजरे को हाथ में लेकर संयोगिता के महल को जाना।

दूहा ॥ कर धर इंछनि कीर लिय। हीर मुत्ति जुत कंठ ॥
मन मंजुल तंडुल दधहि। प्रेम पुच्छ भ्रम नट्ठ ॥ ॥ छं० ॥ २६ ॥
दुज पंजर बहु भांति रचि। अरु [2]जरीय जर झूल ॥
आडंबर जग रचई। भट वेस्या भ्रत भूल ॥ छं० ॥ २७ ॥
मुरिल्ल ॥ सषि संकुल सावक्किति सड्डिय। [3]ग्रिह ग्रिहस राज सद्रिग बड्डिय ॥
दाहिम्मिय समद महिलानिय। संजोइय भुवनह संपानिय ॥
छं० ॥ २८ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयत्ती।
(२) ए. कृ. कौ. नरीन।
(३) ए. कृ. कौ. "ग्रह ग्रह राज मर्फ द्रग वड्डिय।
* छन्द २१ मो. प्रति में नहीं है।

संयोगिता के महल का वर्णन ।

वचनिका ॥ कचित् शृंगारायै । मुक्ति बंधन विहाराय ॥
नवन दृष्टि निहाराय । रंजनं घनसाराय ॥
मृगमदगंध उद्धाराय । अलि निवास उभाराय ॥
मृदु मंजरी रस सुराराय । एवं काम विहाराय ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का सब रानियों को उचित आदर देना ।

सुरिल्ल ॥ द्रिग द्रिग सों रंजिय पंगानिय । आमन समरकंद दिय दानिय ॥
जर जरीन चवरिय तिर चानिय । काजल कुंकुमधु क्रेत पानिय ॥
छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की दसों रानियों के नाम ।

वचनिका ॥ प्रथम पुंडीर जादी । इंद्रावती राज सादी ॥
सुंदरी हमीरं जानी । जंबू गिर इंछिनी मानी ॥
कूरम्भी पज्जून जाता । बलिभद्र नाम भ्राता ॥
कंजानी बड़ जन गज्जरी ज्ञाता । सदलासांमि राता ॥
हंस गमनी हंसावती सुजानी । दिवासी सरूपा सुमानी ॥
दाहिमी रूप रवनी । मत्त मातंग गमनी ॥
आदरं आदि राजा । बीनानं कंठ बाजा ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम का प्रभुत्व ।

दूहा ॥ न्रप बर चामर सषि सरहि । वपु गुंजहि हर नच्छ ॥
कला केलि दिन दिन चढिय । सुक्षगं सँजोई सिच्छ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
सुभ आदर रानिय सुपट्ट । चरित चित्त चहुआन ॥
दुरंद्रिन दाहिम्मिय महिल । किम किन्नौ पायान ॥ छं० ॥ ३३ ॥
श्लोक ॥ सगुनं ज्येष्ठ जेष्ठानां । ज्येष्ठ रूप सरूपिनां ॥
ज्येष्ठ पितु मान राजानां । ज्येष्ठा मान बिलोकनी ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पृथ्वीराज का रनिवास में जाकर सब रानियों को देने के लिये वस्त्र आभूषण देना।

दूहा ॥ राजन उठि मन्निय महल। गहिलै गुरजन सथ्थ ॥
जु कछु चरित तिहि महिल किय। सुनहु सु भूखन कथ्थ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

नग मुत्तिय बंटन बसन। तात संजोइय दत्त ॥
सहस असंषिन लष्षियौ। गनि को कहै निरत्त ॥ छं० ॥ ३६ ॥

रसावला ॥ छबी छब्बि पट्टं, अनेकं निघट्टं।
मनी मुत्ति बट्टं, नगं नेम तट्टं ॥ छं० ३७ ॥
सु गंधं सु घट्टं.......संजोगि सु ग्रेहीं।
उछंगं सु देहीं...............॥ छं० ॥ ३८ ॥
अलष्षं गनानं, सु कोरी प्रमानं, सची सोभ रागं। हुतं देव वागं ॥
छं० ॥ ३९ ॥
अनंदं सु लागं, निसा कित्ति जागं। भुअं भान भागं, धुअं सत्त मागं ॥
॥ छं० ॥ ४० ॥
दिपंती सुहागं, अनूरत्त रागं। * * * * ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सब रानियों का परस्पर मिल कर अपनी अपनी विरह वेदना कहना।

दूहा ॥ अनु दिन सषि संकुल विकल। अंकल केलि सुनि चंद ॥
बरष एक सषि सुष समझि। परपि प्रीति फुनि मंद ॥ छं० ॥ ४२ ॥
परसप्पर मिलि बत्ति कहि। हम नहिं दिठ्ठौ कंत ॥
बरष इक्क हम षम करी। नह लद्धी गति अंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
क्रम क्रम तट छंडै सरहि। बर छंडै रति ओर ॥
मति छंडै बिरह तनहा। गति पावस मति मोर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

(१) ए. कृ. को.-निरूद। (२) ए. कृ. को.-सुग्रहे। (३) ए. कृ. को.-अनुरत्त।

अरिल्ल ॥ यमइ न सब किसु लच्छिन पिम्महि। दहियन रोस सुधारेति नेमहि॥
रमिय न निज निज पतिं कीला । बिन इंछिनि सब ग्रेह सुआनं॥
छं० ॥ ४५ ॥

रानी इंछनी का पृथ्वीराज और संयोगिता के प्रेम की परीक्षा करने के लिये संयोगिता को अपना सुआ देना और संयोगिता का उसे प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करना।

इंछिनि इंछिय अच्छनि रष्षन । राज संजोइय प्रेम परष्षन ॥
दुज दिय हथ्थ प्रजंक संजोइय । निसि गति मोहि कथा सुनि तोइय॥
छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ दिय पामारि पवित्त सुक । लिय संजोइय बंदि ॥
पन प्रजंक टट्टन टरति । गति न कहै सुर सद्दि ॥ छं० ॥ ४७ ॥

संयोगिता का सुग्गे को अपने महल में ले जाना। उसकी शोभा वर्णन।

चंद्रायन ॥ लीय सु दुज्ज संजोइय पत्तिय साल बर ।
जहां आभास सुभासहि मनि मानिक्क जर ॥
चित्र विचित्र विचित्र सु चित्तह रंजि रस ।
थंभ सुरंग अनूप अलंकृत अंग लस ॥ छं० ॥ ४८ ॥
विधि विधि वास तरंग अनंग उछाँह अति ।
मधु माधव किय वास सुभासित रंग रति ॥
जर पंजर कल धौतन उत्त विराजि मनि ॥
सुष आये पित ताम विश्रामित साल बनि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

आर्या ॥ मिलि सा सुष्ष सयानं । मानि गानि अन्न उत्तिमं विधानं ॥
सत्त विहंग विहंगर बानं । मज्जन संजोगि रचि रहि ठानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

संयोगिता का स्नान करके नवीन वस्त्र आभूषण पहिनना। संयोगिता के अंगों का सौन्दर्य्य वर्णन।

मोतीदाम॥ रचे सब मज्जन रज्जन ठान। निरंतर अंतर ग्रेह गुरान॥
राजे सब भूषन पंगज अंग। कलेवर सानि सनेह सु ठंग॥
छं० ॥ ५१ ॥

लहस्सिय कज्जल लोइन लोइ। अनंगु उभारु चब्यौ तन तोई॥
धरें बर पट्ट कनक्कस रूअ। करे बर पट्ट सु घट्टित दूअ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरोहिग पट्ट संजोगिय ताम। मनों सजि पट्टर तिज्जय काम॥
अनेक सुगंध सुवासित बार। सवी सब आनि सु बंधिय धार॥
छं० ॥ ५३ ॥

सने हरि आनि सुधा रस वास। बहू बिध उस्वत अप्प सु राज॥
जलप्पय वासन तज्जिय तिन्न। अरोहित पट्ट जिके चित चिन्ह॥
छं० ॥ ५४ ॥

सुगंध सु धूप अनोपम वास। अनेक सु भांति बिबिद्ध बिलास॥
कनप्पय बुंद चुवै चर केस। तही भय तम्म सु रप्पहि रेस॥
छं० ॥ ५५ ॥

उभै कुल उप्पर कच्च चुअंत। मनों मुति नागिनि संभु चुअंत॥
कुचग्गलि केस सुभै सित लग्ग। सुधा सचि कुंभ सरप्प उरग्ग॥
छं० ॥ ५६ ॥

विराजित भंति अलक्क सु मुष्प। मनों हरि बीहरि सम्मिय रुष्प॥
तिलक्क सभाल रची रचि रेष। मनों मथ ग्रेह दुआरनि देष॥
छं० ॥ ५७ ॥

घनं भुअ दूअ तिलक्कस रानि। जिते धर अद्धर सग्गि सुतानि॥
रचे जल कज्जल रेष सु भेष। मषी भय काम जरे जनु एष॥
छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए. को.-पुअंत। (२) मो.-सुजानि।

चलच्चल नैन सु नासिक रूश्र। कुसुम्मह मधि कलरै [1]श्रलि दूश्र॥
कटाच्छह सेत, चलै सति बंक। नयै जनु बीर कचोल कनंक॥
छं० ॥ ५९ ॥

तिलक्क जरावध बंदन बिंदु। सज्यौ रथ सारहि काम सुइंदु॥
जुत्रा श्रश्र कंध धरे कच एन। तटंकह चक्क जिते तिश्र तेन॥
छं० ॥ ६० ॥

चिबुक्कह बिंद असेत सु बानि। प्रसारित कंज अली सिसु [2]ठानि॥
सुनै जुरि आनि सु नग्ग सु घट्ट। जनौं सजि काम जिते दुश्र पट्ट॥
छं० ॥ ६१ ॥

रोमावलि बान मनंमथ तान। कुरै कुच आट द्रिगं म्रिग ठान॥
रची बर मालिक [3]पुद्रनि रुच। मनोहरि रास सबैं ग्रह सुच॥
छं० ॥ ६२ ॥

बने सब भूषन धारिय श्रत्ति। झनक्किय नूपुर घूघर गत्ति॥
मनौं बजि बाजिच काम स भूप। विजै कज बाज स्रवै पुर नूप[4]॥
छं० ॥ ६३ ॥

[5]तमो रसमो रस पूरिय मुष्ष। बनै सब रास तजै भव दुष्ष॥
अनोपम रूप सिंगार वितूल। धरै कवि मत्त रहे गति भूल॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का सेज पर जाना और सुग्गे को भी चित्रसारी में ले जाना।

चौपाई॥ रचि श्रृंगार अनोपम रूपं। चातुरता गति मति अनूपं॥
मंगहि इष्ट सुकं मति गत्ती। बिधि परजंक [6]संजोगि सपत्ती॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा॥ गयं गति इंछनि दीय दुज्ज। लिय मन हरष सु जानि॥
इह चातुरता दूत है। कहन सुनन परिमान॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए.कृ.को-अति। (२) ए.कृ.को.-थानि।
(३) ए.कृ.को.-पुद्रनि, पुद्रंनि। (४) मो.-नूर।
(५) मो.-"तमोर सपूरिय मोरि समुष्ष" (६) ए. कृ. को.-संजोइय।

शैय्या सुखमा।

विराज॥ प्रजंकं सु जोई, तलप्पं सु सोई। प्रसूनं सभोही, कुंज सुष्य सोही॥
छं० ॥ ६७ ॥

धुअं धूप रुद्दं, उअं मुक्कि गंधं। प्रसंसं प्रसूनं, फलं वासि पूनं॥
छं० ॥ ६८ ॥

चिषा तुष्ट कामं, रति देव धामं। दुजं स्वस्ति मंचं, निरष्षै सुगंचं॥
छं० ॥ ६९ ॥

निसा दीप दानं। रतिं की प्रमानं॥ * * * ॥छं० ॥ ७०॥

रतिवर्णन।

कवित्त॥ रस क्रीडत बिपरीत। थिंति दंपति दंपति रिति॥
पंच पंच सुट्ठए। पंच लग्गे ति पंच पति॥
उठिय बाल सज्जिय दुकूल। सुक पंजर सु धाम चित॥
हर हराट उप्पज्यौ। तजिय अकौट कान कृत॥
धरि यान कथ्थ सुक सौं कहिय। रहि न लज्ज लज्जी विलग॥
जग पुब्ब भाव भांवरि सु बत। सुबर बाल उट्ठी सु द्रिग॥
छं० ॥ ७१ ॥

'ससि रुन्नौ मग 'बह्यौ। कह्यौ सुक सप्त दीप तत॥
तम सु देव पुल्लि पंग। जोति संदीप छिनहि छिन॥
हुई लज्ज अचलीय। कलिय मुद्दं गति जानं॥
छिम छिम तमह रंजिपति। परसि पहु पंजलि यानं॥
न्रप तुष्टि काम कमलारमनं। भवन द्रष्टि रुचिं रमन मन॥
जिम जिम सु बिनय बिलसिय प्रबल। तिम तिम सुक बुद्धिय प्रमन॥
छं० ॥ ७२ ॥

दूसरी रात्रि का रति बिलास वर्णन।

तारक॥ * दुतिया दिन संझ बिजै कुल कम्म। सहचरि प्रौढ़ रमै रति रम्म॥
दुष्षम सुष पिम्म मनोहर रीति। बिलस्सिय आसंभयं भव जीति॥
छं० ॥ ७३ ॥

(१) को.-सामैं। (२) को.-हहयौ। * मो.-प्रति में नहीं है।

मुक्त ॥ आसीनी सज्जानी विग्यानी उल्लानी निरधानी ध्यानी उरथानी॥
वय न्यानी सम्मानी अलसंजु तानी उहित न्यानी सषि आनी॥
पारस संजोइय मुष मुष मोहिय संतोहिय * *
* * * * * * छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ संकल अंकुलयं बिपथ । चष कंकन उन पान ॥
प्रथम रवन रवनिय मिलिय । रति गति राजन आन ॥
छं० ॥ ७५ ॥

सुख-सहवास का क्रमशः चाव और आनंद वर्णन ।

चोटक ॥ तन कंपन कुं पुनयं पुनयं । सनयं सनयं सिरयं धुनयं ॥
बलयं चलयं नकयं चकयं । अलि भारनें मंजरियं भगयं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रियनं प्रियनेंति पियूष पियं । धकयं धंक छंडिन तोहि अयं ॥
लजनं रजनं भजनं भवनं । चतुरष्ट न तुष्ट रचैं रवनं ॥छं०॥७७ ॥
कलिनं अलिनं ललिनं वयनं । सयनं [१]चलिनं चलिनं रचनं ॥
* * * । * * ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ सुनि संचल अंचिल रवनि । तन धर हरि दिढ कम्म ॥
संषि पारस [२]सारस व्रतन । नव कर बंधिलि अरम्भ ॥छं०॥७९॥

पारस ॥ नै व्रत सज्ज्या, जोवन पुज्ज्या ।
छं० ॥ ८० ॥
....
सैसव साता, रम्मन काता ॥
विलसिनं तांता, सुर [३]तित आंता ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूहा ॥ अग्गिराज संजोगि सौं । आनि चतुरभय चित्त ॥
एकादस पूरे अपंग । पंचम परसु सहित्त ॥ छं० ॥ ८२ ॥

एकम से लगा कर पूर्णिमा पर्य्यंत का रति वर्णन ।

चोटक ॥ हक्रितं हक्रितं क्रितयं क्रितयं । दह अंगुलि संमुषयं मितयं ॥
अमियं अपि वासन तं हितयं । मनु आप निषद्ध पतं चितयं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-सलिनं । (२) मो.-पारस । (३) ए. कृ. को.-सुरतिन ।

सुक द्रष्टिहि द्रष्टिनि छोह लजं। दिव दीपक अंचलयं जु भजं॥
दुतियं दिन केलि कला बरयं। चितयं चिष झंझि समावरयं॥
छं० ॥ ८४ ॥

उभयं दुति दीहनि चामरनं। दुति तीय दिनं सम तुष्ट रनं॥
पट पट्टिय लज्जि सु नीर दियं। सत सत्तय पैमिनि प्रेम प्रियं॥
छं० ॥ ८५ ॥

चवदून दिनं छिनयं दिनयं। निज नोमिय नौरसयं भनयं॥
दसमौ दिसि हड्डिय प्रीति घनं। दस एकह एक सु एक मनं॥
छं० ॥ ८६ ॥

रति द्वादस द्वादस देवतियं। दस तीनि सिआर पिलो कलियं॥
दस च्यारि चयं सुकयं मुकयं। सुभ पूनिम इंछिनि सो भएयं॥
छं० ॥ ८७ ॥

रति के अंत में दंपति की प्रफुल्लता और शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ देषि बदन रति रहस। बुंद कन स्वेद सुभ्भ बर॥
चंद किरन मन मध्य। हथ्थ कुठ्ठे जडु डुक्कर॥
सु कविचंद बरदाय। कहिय उप्पम श्रुति चालह॥
मनो मयंक मनमथ्थ। चंद पूज्यौ मुत्ताहय॥
कर किरनि रहसि रति रंग दुति। प्रफुल्लि कली कलि सुंदरिय॥
सुक कहै सु किय इंछिनि सुनवि। पै पंगानिय सुंदरिय॥
छं० ॥ ८८ ॥

दूहा ॥ अप्रापत प्रापति सु पति। कर संजोइय काम॥
उर आनंदिय अप्प वर। ते चिय पुज्जिय वाम॥ छं० ॥ ८९ ॥
सुष सुष मंडिय रति रवन। सुभ इंछिनि प्रति प्रात॥
गुरजन गुर लज्या दवन। विपथ बिकंपन गात छं० ॥ ९० ॥

इंच्छनी का सुग्गे से संयोगिता का रतिरास पूछना।

लज्जन लष्षन जन सजन। कहुं सुक संकुल पंष॥
कनि रतु तु तन जंपनह। तं पिन पिन तं अष्षि॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-ठीय। (२) मो.-श्रेद। (३) ए. कृ. को.-सुनहि।

सुग्गे का कहना कि यद्यपि ऐसा करना पाप है परन्तु कहता हूं सुन।

हसन गुरज्जन सबकि मुष। दूषन मुगध बधूनि॥
फिरि फिरि फिरि पंजर परनि। मंजरि कलि हरि धनि॥ छं०॥९२॥

संयोगिता के मुख की शोभा वर्णन।

अरिल्ल॥ सुनि इंछिनि [1]पंगी जु रवन्नी। धपत राज सुभ लाज संवन्नी॥
आननयं काननयं कन्नी। पूनिम पूरनयं सुक व्रन्नी॥ छं०॥९३॥

सुग्गे का पृथ्वीराज और संयोगिता का अंतरंग रास वर्णन करना और सखियों सहित इंच्छनी का चित्त दे सुनना।

गाथा॥ छंदम छंदयलं सुक छंदं। मो मंजीरनयं सुर मंदं॥
बर किंकिन पंकित पुक्कारं। हक्कित क्कित सुर मुर उच्चारं॥
छं०॥ ९४॥

विपन पनोकनु मंधरि धीरं। षंडन कल पल करि अति भीरं॥
कच्च यहि रति रिझ्झन रंग रोरं। पंपुलितं ललितं गति मोरं॥
छं०॥ ९५॥

काकज पाल नयं सब दंधी। भाष छ उच्चरियं मन मुंधी॥
अच्छतयं च्छतयं श्रभ राजं। तंदुल मंदुलयं करि साजं॥ छं०॥९६॥
भूषन दूषनयं करि दूरं। उम्मन चुम्मनयं करि पूरं॥
जंजं लोचनयं छिन जूरं। तंतं उच्चरियं मुष मूरं॥ छं०॥९७॥
हं हं हं कुलयं कल लज्जी। चरबर चंच पुटीं सुर सज्जी॥
.... छं०॥ ९८॥

[3]धर धर छत्तिय नच्छित लोलं। हर हर सावक्किय हंसि बोलं॥
दुंदुन मंदुनयं दुरि दुरियं। परिजय पंक पजंकनि सुरयं॥
छं०॥ ९९॥

(१) ए. कृ. को. पगिनि। (२) मो. परि।
(३) मो.-धर धर धर छातियन छिन लोलं।

संरन मारयनं प्रिय सरयं । तिथि बिधि पंच दसी दिन भरयं ॥
इहि बिधि केलिनि पाइ जियन्नं । इति एकंत पुकारि पियन्नं ॥
छं०॥१००॥

कवित्त ॥ सुकिय वक्र कटाछय । श्रवन लग्गत ओपम-थपि ॥
शिव कंद्रप द्रग कूप । श्रवन कन्या लेयन धुपि ॥
द्रुति तरंग उल्हसहि । फेरि ता कूपन माही ॥
तातें रंग सागरह । पर्यो मनु बुंद अथाही ॥
सुक कहै सुकिय इंछनि सुनहि । भम्म भसेकन छंडि तृत ॥
तारंग तंत तरुनी सु बर । सुवर बाल भ्रुट्रिय सुमति ॥छं०॥१०१॥

दूहा ॥ श्रुति राजन हुंकित हंसन । कुंचित हंसन नयन्न ॥
चुटि चाटंकन भगन किय । नग बिनु रहन सबन्न ॥छं०॥१०२॥

सुग्गे के दूतत्व की धृष्टता का कथन।

कुंडलिया ॥ जो रस रसनन अनुदिनह । अधर दुराइ दुराइ ॥
सो रस दुज कन कन कह्यौ । सषिन सुनाय सुनाइ ॥
सषिन सुनाइ सुनाइ । हियै सुचि सुचि लज मन्नह ॥
सुथल्ल विथल्ल थल कंपि । नेन नटकीय नहन्नह ॥
जियन मरन मिलि मेंन । कह्यौ अदभुत प्रिय रस ॥
ए रस अंतर भेद । प्रीय जानै चिय जौ रस ॥ छं० ॥ १०३ ॥

इंच्छनी का संयोगिता के गूढ अंगों के विषय में पूछना।

दूहा ॥ फुनि पुच्छति इंछिनि सु कहि । सौति रूप मनि साल ॥
तौ पुच्छौं कैसी कहै । अंतरंग सु बिसाल ॥ छं०॥ १०४ ॥

सुग्गे का संयोगिता के प्रच्छन्न अंगों का वर्णन करना।

कवित्त ॥ क्रिसल थूल सित असित । थान चव एक एक प्रति ॥
पानि पाइ कटि कमल । सथल रंजे सुच्छिम अति ॥
कुंच मंडल भुज मूल । नितंब जंघा गुरुअत्तं ॥
करज हास गोकन्न । मांग उज्जल सा उत्तं ॥

कुच अग्र.कच्च द्रिग मद्धि तिल्ल। स्यामा अंग सब्ब गवन ॥
षोडस सिंगार सारूव सजि। सांइ रंजै संजोगि तन ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सुग्गे का सम्पूर्ण शृंगार सहित संयोगिता के नख शिख का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ संजोग जोंग जय सुंत तंठ। आनंद गान जिन करिय कंठ ॥
बर रचिय केस विच्चि सुमन पंति। विच धरे जमन जल गंग कंति ॥
छं० ॥ १०६ ॥

सिर मद्धि सीसे फूलह सुभास। किय जमन अद्ध सुर गिरि प्रकास ॥
कुंडली मंडि बंदन स, चंद। कैसूंतूर ढिगह घनसार बिंद ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बर किरन भोम परसत प्रकार। मनों ग्रसित राह ससि सहित तार ॥
ओपमा भूअ बेनी बिसाल। नागिनी असित ससि सहत बाल ॥
छं० ॥ १०८ ॥

ओपमा भाव उच्चरि बिदूष। मनु ससी राह सित पष मजूष ॥
सैसब्ब मद्धि जोवन प्रवेस। देषियै नैन मग अति सुदेस ॥
छं० ॥ १०९ ॥

ओपम स कव्वि बरदाय कीय। ज्यों ग्रेह उंच दिसि जल निदीय ॥
सित असित सोभ द्रिग बर बिसाल। कै ससिज प्रगटि तम मद्धि बाल ॥
छं० ॥ ११० ॥

ओपम्म चंद नासिक बिसाल। मनों अरै लरन रवि राह बाल ॥
ओपम्म अधर कवि कहिं विदभ्य। उग्गरे अद्ध ससि चषि मजूष ॥
छं० ॥ १११ ॥

सोभै सुरंग दंतनि सु पंति। कदलीन कीन कै मुत्ति कंति ॥
कै नरु सु बिंब लंबौ सुरंग। ससि भूम गंग जल सिंचि अनंग ॥
छं० ॥ ११२ ॥

मधु मधुर बानि कलयंठ रह। आनंग अनेव केवल सु सह ॥
तारक तेज नग जटि सुरंग। ओपम्म चंद तिन कहि सु अंग ॥
छं० ॥ ११३ ॥

¹वित्ततहँ सत्त सब चिच हूर। सेवहित सत ग्रह तप करूर॥
नग धरै अरनि धारे सु तब्ब। तिन मभिभ्क रहिग ससि कला सब्ब॥
छं० ॥ ११४॥

कप्पोल कला कल नगज मीप। दुहुं परी होड़ मयुषं समीप॥
चिवली सुरंग बिच पीति जोति। ओपम्म सुबर तित मभिभ्क होति॥
छं० ॥ ११५॥

उछराह रेह गुरु जोज गम्म। परदष्षि देत ससि देषि हम्म॥
मुतियन माल कुच विच सुरंग। प्रतिब्युंब फलकि मुष उदिभ अंग॥
छं० ॥ ११६॥

ससि अंग मीन-दिट्ठ मनि थाहि। ससि सहत कढत अहि गंग मांहि॥
²जगमगत कंठ सिर कंठ केस। मनु अट्ठ ग्रह चंपिससि सीस बैसि॥
छं० ॥ ११७॥

नग माल लाल कुच पर बिसाल। ओपम्म चंद चिंती सु साल॥
चिंतिय सु बंर बर सिंभ पुब्ब। मनमथ्थ ऊक मुष फुंकि उच्च॥
छं० ॥ ११८॥

निक्करि सु माल उर बली भासि। ओपम्म चंद बरदाय तास॥
बिय पंति सोम रचि अति सुलाह। ससि गहन चढत जनु न्नपति राह
छं॥ ११९॥

सोभै चिमाल कुच तट तरंग। जनु तिथ्थराजै मंडलौ अनंग॥
सोभै सुरंग कुंचकी वाम। जनु संबरेह पटकुटी काम॥छं०॥१२०॥
राजीव रोम राजै सु कंति। उत्तरन चढ़त पप्पील पंति॥
चित लोभ भरिग ग्रहराज जंति। दिठि राह मेर परसूरि सु पंति॥
छं० ॥ १२१॥

कटि तट्ट छुद्र घंटिय रुरंत। जगमग सु नग्ग ओपम्म कंति॥
कविचंद देषि ओपम्म भासि। ग्रह लगे चंपि जनु सिंध रासि॥
छं० ॥ १२२॥

कटि घाट निठ्ठ मुट्ठहि समाय। मनुं ग्रहन धनुप मनमथ्थ राय॥

(१) मो.-विलह। (२) मो.-जगमत्त।

नितंब गरूअ द्रप्पन कि काम। उदै अस्त भानु जनु पंथि वाम॥
छं० ॥ १२३ ॥

बर जंघ रंभ विपरीत तंभ। कै पिंडि दिष्ट मनमथ्य संभ॥
ओपम्म वीय कविचंद सादि। मनमथ्थ हथ्य उत्तरि परादि॥
छं० ॥ १२४॥

पिंडीय पग्ग ओपम्म थट्ट। कुंकुम कनक सम तेज घट्ट॥
नषै न्रमल तेज तारक्क मुत्ति। कंद्रप्प द्रप्प दिपि कार धुत्ति॥
छं०॥१२५॥

षोड़स सु सज्जि सजि मुत्ति बाल। घुंघरनि नग्ग जटि अति सुसाल॥
ग्रह अट्ठ होड़ तजि होड़ हंस। सजि तेज भूलि गति भूलि तंस॥
छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता के परस्पर प्रेम नेम और चाह का वर्णन ।

दूहा ॥ अह निसि सुधि जानै नहीं। अति गति प्रौढ़ सु रथ्थ ॥
गुरु बंधव ध्रित लोक सब। मन विपरीत सु गत्ति ॥छं० ॥ १२७ ॥
विजुरन मन चित्तै नहीं। मनो बसंत रिति अंग ॥
रस लोभी भ्रम भ्रम भ्रमे। विसराए सब अंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥

चोटक ॥ सगना जिहि च्यारि परंत गुरं। सोइ चोटक छंद प्रमान घरं॥
पय मत्त बन्न बरनं बन्नं। निंय नाग कहै चष जा श्रवनं॥
छं० ॥ १२९ ॥

पवनं गति सीत सुगंध सु मंद। लगै भ्रम रीतन मन्न अनंद ॥
जगी जोग भ्रंग निभ्रंग निवार। सुनिड्डनि कंठिय कंठ सहार ॥
छं० ॥ १३० ॥

कुहकुहु कांम सु धांमं धमारि। उड़ै पिय पंष पराग सवार ॥
मुकल्लित मल्लित हल्लितं पोंन। ननं कविचंद रसंमि सु मौंन ॥
छं० ॥ १३१ ॥

प्रथम्मह प्रेम दुवं सुष लष्षि। उदै रवि रथ्थ मनों रथ मष्षि॥
मुदै न लिनं अलिनं रहि मंझि। मधु व्रत मत्त बसो जिन संझ॥
छं० ॥ १३२ ॥

रहै गहि संपुट लंपट नारि। सु पंष पराग हरै उन हारि॥
रसं घन घुंटि गुलाल सु थाल। घटी घटि लग्गि फुनिप्फुनि लाल॥
छं० ॥ १३३ ॥

तरव्वर बौर सिरी बर बौर। गिरै जिनि लग्गि पिया अलि और॥
मधू रस मिश्रित पाडर डार। बजे रव रंग उपंग सु मार॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु वेत सेवंति कुमक्कुम काज। पिजै जिन पीन अहो षगराज॥
सु चंपक चारु विलामन कंध। दरस्सन देवि कियौ दल गंध॥
छं० ॥ १३५ ॥

लगै अंग केतु कि पंग पराग। तुटै लगि कंठक कोइय भाग॥
बन व्रत्त बेलि बिलंबहु बेलि। करों दिन केक करन्निय केलि॥
छं० ॥ १३६ ॥

लबक्किय लग्ग लवंग निहार। मनों न सु गंध कुसम्मं अगार॥
सहै न बियोग बुरै सिर गात। तजै तिन कंत बसंत प्रमात॥
छं० ॥ १३७ ॥

अवस्सर प्रीति न मुक्कहि प्रान। हंसै तिन नेह न बेन सुजानि॥
इसी विधि कंत मधू मधु नारि। कहै मिसि धार बसंत बिचारि॥
छं० ॥ १३८ ॥

अली लगि कंत किमंध सु गंध। लगे न्वए काम पगानिय बंध॥
रते रति राम पराग बचन्न। रहै ठग लग्गिय काइक मन्न॥
छं० ॥ १३९ ॥

सबै रट रित्तुनि राज बसंत। भ्रमे भ्रमरावलि नारु सु कंत॥
* * * ॥ * * * छं० ॥ १४० ॥

(१) ए- कृ. को.-लग्गि अग्गि। (२) मो.-हीन। (३) मो.-मात।
(४) मो.-हसै तिन नैनह वैन सजान।

दंपति के रतिरस की रात्रि के युद्ध से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ लाज गढ्ढ लोपंतं। वहिय रद सन ढक रज्जं ॥
अधर मधुर दंपतिय। लूटि अब देव परज्जं ॥
अरस प्ररस भर अंक। षेत पुरजंक पटक्किय ॥
भूषन टूटि कवच्च। रहै अध बीच लटक्किय ॥
नीसान थान नूपुर बजिय। हाक हास करषत चिहुर ॥
इति वाह समर सुनि इंछिनिय। कीर कहत वत्तिय गहर ॥ छं० ॥ १४१ ॥ *

कर कंकन मुद्रिका। छुद्र घंटिका कटि तट ॥
वसन जघन पहिराइ। भार वित्तयौ सुघन थट ॥
कुच निहार कन्चुकिय। भुज्जनि बंधे बाजू बंध ॥
पग तोड़र नूपुरिय। हरे रुपि अडिग षेत मधि ॥
संग्राम काम जीतें भरनि। करिय रीझ कनवज्जनिय ॥
तंबोल पान दीनो अधर। कीर कहत सुनि इंछिनिय ॥ छं० ॥ १४२ ॥ *

तम्म रस तौय सँजोगि। सुमन सहत्तीय बिसराइय ॥
पति कों नव रस भँवर। प्रीति पीमिनि सिरछाइय ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ। हंस सरह षग रज्जं ॥
नेह बीर बचननि पराग। लाज कोद्दिव सुष पज्जं ॥
अन जंत रुप लहरीति गुन। दुत्तिय यह थाह मयन ॥
सक्कंत प्रेम उद्दित उदित। वर फुल्लित बर सुनि बयन ॥ छं० ॥ १४३ ॥

मदन बुयट्ठौ राज। काजं मंचौ तिहि अग्गै ॥
हाय भाय विभ्रम कटाच्छ। भेद संचारि विलग्गै ॥
कामि कमलनी बनिय चक्कनिय निय नित्यं भर ॥
मोह विद्दि पिभ्भति। प्रज्ज मो मनिय पिंड बर ॥
बीनौलि मधुर तिहि लोभ बसि। बसि संजोग माया उरह ॥
कथपन मग्ग गहि अंगम गति। न्टप क्रम सह छुट्टिय बरह ॥ छं० ॥ १४४ ॥

---

* छन्द १४१ और १४२ मो. प्रति में नहीं है।

संयोगिता की समुद्र और पृथ्वीराज की हंस सें उपमा वर्णन।

दूहा ॥ दुंहु दिसि बढिय सनेह सब । संजोगिथ बर कंति ॥
जियरा बार बिछुरत तरुनि । हंस जुगल विछुरंत ॥ छं० ॥ १४५ ॥
रूप समुंद तरंग दुति । नदि सब की मलि मानि ॥
गुन मुत्ताहल अप्पि कै । बस किन्नौ चहुआन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
गुर ध्रित चिय देषंन प्रिय । दुज मिटि दोन न बार ॥
निमुष रूप संजोग की । टरै न वार ध्रतार ॥ छं० ॥ १४७ ॥

कुंडलिया ॥ उज्जल कहु संजोगि में । नेह स पुत्ती रूप ॥
कला सहित पूरक्क ससि । अहि अजीज मिलि भूप ॥
अहि अजीज मिलि भूप । तिमर तोरेज पंगै दल ॥
राह रूप सुरतान । लग्गि सु कीनौ कीव बल ॥
* * * । तप विडंभूत न मुज्जल ॥
चकवा कहु जनंन । सुष अरपति अति उज्जल ॥ छं० ॥ १४८ ॥

दूहा ॥ दो इंछनि पुच्छै सषो । किहि वय किहि मति रूप ॥
किहि लच्छन उनिहार किहि । किम दच्छिन रचि रूप ॥
छं० ॥ १४९ ॥

संयोगिता के अंग प्रत्यंगों पर प्रतीयालंकार कथन।

कवित्त ॥ ससि रुन्नौ म्रग वद्धौ । काम हीनौति भीन रति ॥
पंकज अलि दुम्मनौ । सुमन सुम्मनौ पयन पति ॥
पतंग दीप लग्गिय न । मीन दुम्मनो जीय नम ॥
सुकिय सषिय सुष दिष्ट । चितचिंतति नेह भ्रम ॥
सुष सक्ति हीन सो दान न्रप । हाव भाव विभ्रम श्रवन ॥
यों रति चरित्त मंगल गवन । सुनि इंछनि इंछनि रमन ॥
॥ छं० ॥ १५० ॥
ऐरापति भय मानि । इंद गज वाग प्रहारं ॥
उर संजोगि रस महि । रह्यौ दबि करत विहारं ॥

(१) मो.-अजीत ।

कुच उच्च जनु प्रगट्टि । उकसि कुंभस्थल आइय ।
तिहि ऊपर स्यामता । दान सोभा दरसाइय ॥
बिधिना निमंत मिट्टत कवन । कीर कहत सुनि इंछनिय ॥
मन मध्य समय प्रथिराज कर । करज कोस अंकुस बनिय ॥ छं० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ वै दुष चिय इंछिनि सुनिय । रूप प्रभूतन साहि ॥
चिसल तेज लग्गिय चिभू । संजोगी सुनि ताहि ॥ छं० ॥ १५२ ॥

संयोगिता की स्वाभाविक एवं सहज लुनाई का वर्णन ।

हनुफाल ॥ सुनि इंछिनीय सु जानि । रस करनि घरि सुनि कान ॥
लज देहु विटप सकाम । बर व्रक्ष दिष्यय[1] काम ॥ छं० ॥ १५३ ॥
मुष कहन कंत सु बत्त । तिय बदन धूम सरत्त ॥
सुनि कहत ओपम ताइ । मुष संम द्रप्पन झांइ ॥ छं० ॥ १५४ ॥
अति छीन बद्दल जेम । ससि तेज तरुनि कितेम ॥
सुनि इंछिनि बर जोइ । कर छुट्टि मैला होइ ॥ छं० ॥ १५५ ॥
बर रूप सागर बढ्ढि । मनमथ्थ मथि करि कढ्ढि ॥
भरि एक सकन निस्संक । पुन लभ्भ लोइन रंक ॥ छं० ॥ १५६ ॥
द्रिंग सहित देषिय जोइ । तन चिविध ताप न होइ ॥
सुष बंछै दिषि तजि दंद । ज्यों जाय सो मंद कंद ॥ छं० ॥ १५७ ॥
चतुरान देषिय रिष्य । सातुक्क भाव विसिष्य ॥
न्त्रिप देषि बज्झिय सथ्थ । बर बेन सम लै हथ्थ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गुन चवन सुनन न कोइ । कवि थके ओपम जोइ ॥
ससि सरद कहि हंस जोइ । शिवगंग बहरी होइ ॥ छं० ॥ १५९ ॥
चामीय करतिय जोग । संजोगितासी जोग ॥
सुनि इंछिनी तजि रीस । लछिने बाल बतीस ॥ छं० ॥ १६० ॥
भय रूप शंकर पीय । होवै न चीय न बीय ॥
ससि पंचमिय घटि बढ्ढि । चिय देषि षह मुष चढ्ढि ॥ छं० ॥ १६१ ॥
सम नही इसिमती जोइ । छिन गरुअ छिन लघु होइ ॥
देषंत चीय सुरंग । तन भयौ काम अनंग ॥ छं० ॥ १६२ ॥

(१) मो. दिप्पय ।

उप्पनौ देषि सु हंस। जौ लियौ बन कौ अंस॥
सुनि कोकिला कलि राव। भयौ बरन स्याम सुभाव॥छं०॥१६३॥
ओपम्म दीजै आहि। सो नहीं ओपम चाहि॥
बम्र चीय अह निसि ग्रीय। जुमि जम्म सम्हौ जीय॥छं०॥१६४॥
मैसब वासी नारि। जो भइ पुब्ब संसार॥
मति मान गरुअ समद्द। रति करी छबि बर रद्द॥ छं० ॥ १६५॥
व्रह्म नहरि नारि न बीय। किहु नाइं रचि बुधि कीव॥
संजोगि मन कढ़ि ओइ। छिन बीय द्रप्पन होइ॥ छं० ॥ १६६॥
सम्भाव प्रीति विपंग। सरे पुच चिय मन अंग॥
* * * * ॥ * छं०॥ १६७॥

संयोगिता के नेत्रों का वर्णन

दूहा॥ बाला संभरि बलि बयन। सीत सीत रति रंग॥
राह केत मंगल बिचें। जमुन सरसती गंग॥ छं० ॥ १६८॥
मर बल अंबर बदन सौं। लोयन सो करषाइ॥
ईह अपूरब चरि अरक। पंती अट्ट कलाइ॥ छं० ॥ १६९॥

सुग्गे की उक्त बातें सुन कर इंछिनी रानी का अत्यंत दुखित होना।

मुरिल्ल॥ कल कल बानी सुक प्रगासै। द्रह बाल बे कौतिक भासै॥
जौ को दीष दीह तो बालं। जंप्री प्रेम तोहि तो कालं॥
छं०॥ १७०॥

दूहा॥ जं देही तौ दुष्पई। दुष्पह सुष्प सरीर॥
दुष्प नं अन्न सुष्पतं। किय सो कंनि धरीर॥ छं०॥ १७१॥
सतम बरस सज्जिय अरय। दीन छीन संसब्ब॥
द्रह चीय अरु थिर अरथ। देह विधिनि लिषि देव॥छं०॥१७२॥
राजन सुक पुच्छन विगति। भयो इंछिनि दुष राज॥
ह्न मायारस भुल्लयौ। नहु पायौ गुन काज॥ छं० ॥ १७३॥

सुग्गे का इंछिनी को समझाना कि वृथा दुःख करने से क्या लाभ है।

गाथा॥ जीवं वारित रंगं। आयासं नथ्यिवै दुष्ष देहं॥
भाविय भाविय गतनं। किं कारनं दुष्ष बालायं॥ छं०॥१७४॥

रानी इंछिनी का कहना कि सौत भाव का दुःख मैं भुला नहीं सकती।

दूहा॥ सौत सोत चंचल भयं। भिरिग दोष अनुराग॥
मनु चित नेन व्याहन चढ़े। दूजे कानंनि पुछि भाग॥छं०॥१७५॥
जौ पुच्छै सुंष दुष्ष मौ। तौ मौ एह अंदेस॥
देषि कहै बर ब्रत्त मैं। किहि गुनं रचिय नरेस॥ छं०॥ १७६॥

सुग्गे का सलाह देना कि यदि तूं यह महल छोड़ दे तो तेरा दुःख आप घट जावे।

सुनि बाला बर बेन मुहि। मंच भेद बहु भेस॥
जौ बंछै इंछिनि महल। तौ मेटै अंदेस॥ छं०॥ १७७॥

इंछिनी का महलों से निकल कर चलने की तैयारी करना।

कवित्त॥ सुक पंजर करि हेम। माल मोतीन मंच जरि॥
धन सुगंध निकुरास। देस संष गुरिग हय धरि॥
दस हथ्थी इंछनि रसाल। माल षिय साल[1] उनंगी॥
सेत रत्न बर सुमन। मुंक्कि करि गंध सुरंगी॥
नर भेष नारि कंचुकि सरस। दुइ दासी बर भज्जि मन॥
ग्राम चुक्कंति दुक्कति विकम। बयन दरसि सज्जल नयन॥छं०॥१७८॥

राजा का इंछिनी को रोकना और मान का कारण पूछना।

अरिल्ल॥ दस हथ्थी पंजर धर मुक्किय। दिसि संजोगि राज दिठि रुक्किय॥
नन तुच्छौ न्रप पच्छिल रत्ती। ज्यों सर फुट्टै हंस प्रपत्ती॥छं०॥१७९॥

(१) ए. कृ. को.-उतंगी।

सुग्गे का कहना कि इस सब का कारण संयोगिता है।

दूहा ॥ वक्र दिष्ट संजोग की। सुक कहि न्वपहि सुनाय ॥
एक अचिर्ज्ज इंछिनिय। में ग्रह दिट्ठी रीइ ॥ छं० ॥ १८० ॥

मुरिल्ल ॥ गरजी तब ढोलक सघनं। बढ्ढि न घन नेह सयन्नं ॥
दोष त्राकोचल भोज पलायौ। भगि अंकुरिय बिरह पनायौ ॥
छं० ॥ १८१ ॥

राजा का कहना कि रे पक्षी तु ही ने भेद किया फिर ऊपर से बातें बनाता है।

दूहा ॥ कहै सुक फुनि फुन्नि न लग। न्त्रिप सुनि कहौ न बत्त ॥
मंच भेद उप्पर करी। करत चित्त अनुरत्त ॥ छं० ॥ १८२ ॥

सुग्गे का इंछिनी से कहना अच्छा तुम दोनों निपट लो।

जब सुक न्वप कानंन लौ। तब पुच्छयौ बर जोइ ॥
जो कछु कह्यौ सु कंत सौं। ज्यौं कह्यौ कंत जो होय॥छं०॥१८३॥

राजा के मनाने पर इंछिनी का मान जाना।

पद्धरी ॥ मति मान रूप लच्छीय मान। जौवन सु पीव आनंद थान ॥
करवत्त दोष कप्पन कुंवारि। वर कंक दिन्न बर सब्ब रारि ॥
छं० ॥ १८४ ॥
धुम्मर बदन्न दुष दमित पाइ। ज्यौं आनंद जाइ कुमलाइ पाइ ॥
मंडित्त मत्त तिहि चाहुआन। सुष रुट्ठि चीय नन रुट्ठि प्रान ॥
छं० ॥ १८५ ॥

राजा पृथ्वीराज को रानी के मान करने का दुःख होना।

चौपाई ॥ न्वप पर दुष्ष अलप्प जु किन्नौ। ज्यौं बारि गयौ तरफ रहि मीनौ॥
दुष निद्रा निसि घट्टिय आई। तिहि न्वप सज्ज सपन्नौ पाई ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रात्रि के राजा पृथ्वीराज का स्वप्न देखना। स्वप्न वर्णन।

भावी गति आगम किगति। को मेटन समरथ्थ॥
राम युधिष्ठिर और नल। तिन मैं परी अवथ्थ॥ छं० ॥ १८७॥
मान करै मति हीन नर। जोवन धन तन रूप॥
कौंन न दिन द्वै है गये। बिना ज्ञान रस कूप॥ छं० ॥ १८८॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके शुक विलास वर्णनो नाम बासठवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ६२॥

आषेट चष श्राप नाम प्रस्ताव ।

[तिरसंठवां समयं]

कन्नौज में समस्त संगे संबंधियों के मारे जाने से पृथ्वीराज का खिन्न मन होकर उद्विग्न होना ।

दूहा ॥ जिन बिन नृप रहते न छिन । ते भट कटि कनवज्ज ॥
उर उभ्भर रष्षत रहै । चढै न चित हित रज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ कटे कुटुंब जन मित्त । हितकारी का का भट ॥
कटे सूर सामंत । सज्जन दुज्जन दहन ठट ॥
कटे सुसर सारे सहेत । मातुलह पल्लय फुनि ॥
कटे राज रजपूत । परम रंजन अवनी जन ॥
निसि दिन सुहाइ नह नृपति कौं । उच्च सास छंडै गहै ॥
अंतरति अग्नि उद्वेग अति । सगति सूल सालै सहै ॥
छं० ॥ २ ॥

राजा के मन बहलावे के लिये रानी इंछिनी का कहना कि हम लोगों को अहेर का रहस दिखाइए ।

दूहा ॥ तब सारे अंते उरह । कीनौ मनौं विचारि ॥
नृप अग्गैं उच्चार किय । धूरि मुष अग्ग पँवारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
चरन लग्गि युग जोरि करि । कह्यौ सुनहु महि इंद ॥
हम्महि सिकार दिषाइये । मत्त मृगादिं मयंद ॥ छं० ॥ ४ ॥
क्यौं बरोह बागुर रूवै । क्यौं बंधहि बर बानि ॥
क्यौं छुट्टै छर डोरि कै । क्यौं जुट्टहि सक स्वान ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का कहना कि तुम लोग अपनी तय्यारी करो ।

विहसि बचन अलसित नयन । दिय इह उत्तर राय
गोठि करो गोरी सकल । तो आषेट षिलाइ ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानियों का राजा की आज्ञा मानना।

कहि परमान प्रनाम करि। रानिय मानिय बात॥
सकल परच संजोगिता। साज सु जोवत प्रात॥ छं०॥ ७॥

राज महल के प्रभात की आभा वर्णन।

पद्धरी॥ हुअ प्रात रात पति अस्त हुअ। उडगन सु गए तजि बिना धूअ॥
प्रसरे पवंन तर बरन पान। जोगिंद जग्य पूरै बिषान॥छं०॥८॥
झंझरि झनंक भई देव द्वार। पुल्ले किनंकि ग्रह ग्रह किंवार॥
नर नारि वारि फिरि लाज कौन। झट झट झटक्कि पट कूज लीन॥
छं०॥ ९॥
उठि प्रात गात दुजराज मंजि। पढि बेंद मंच हरि देव रंजि॥
गर बंध धंध छुट्टिय सुधेन। लीनौ अछादि गौरै न गेन॥
छं०॥ १०॥
नौबति निसान दरबार बज्जि। रिफ रोर चोर गय कुहर भज्जि॥
सहनाइ सुरति कीनौ संचार। गायन ललित गरबर उचार॥
छं०॥ ११॥
पावन प्रसाद पुल्लै पुरान। अविछन्न धार हर होत न्हान॥
सत सती पाठ पाठी करंत। जप ध्यान इक्क नव ग्रह धरंत॥
छं०॥ १२॥

रानी संयोगी का शैय्या से उठ कर गोठ की तैयारी के लिये आज्ञा देना।

तिहि बार जागि रानी संजोइ। दिय हुक्क बोलि बड़वार दोय॥
झट लेहु साह झगरू बुलाइ। मागै सु द्रव्य दीजौ गिनाइ॥
छं०॥ १३॥
करियो अनेक पकवान बानि। सक्कै न कोइ जिन जाति जानि॥
सौरंभ संवारि मिलह्ह अनेक। घन सार सार म्रग मद विवेक॥
छं०॥ १४॥
एलचि लवंग संगति संवारि। स्यामा समेत सद सुद्धि डारि॥

राम्रमठी रंग रचि मिरचि देहु। पुनि सकल भांति गोरसहु लेहु॥
छं० ॥ १५॥

दूहा॥ लेहु सरस सक्कर प्रहिल। पांडी पंड अनंत॥
विंजन बहु बनवाइयौ। लागे गहर गनंत॥ छं०॥ १६॥
पानि पंथ पहुंचाइयौ। सकल बाटिका बीच॥
कीजहु बहु आचार सों। दरसंन लहै न नीच॥ छं०॥ १७॥

रंनिवास की कतिपय दासियों के नाम।

चोटक॥ सुनि सद्द इतैं श्रुति स्वामिन के। नमि बुग. चले गज गामिन के॥
गुनबेलि खेलनि बीच बड़ी। नृप कैं चित आचप कोर गड़ी॥
छं०॥ १८॥

मदनावति मालति मोहनियं। कमला विमला संग सोहनियं॥
बुधिलाल लिलावति लाजमती। क्रम माल मराल गवन्न गती॥
छं०॥ १९॥

पद्म मंजरि पंजरि नेन नगी। सुर हंसिय बंसिय पेम पगी॥
ललिता कलिता चलिता सु सषी। रतनाबलि रामगिरी निरषी॥
छं०॥ २०॥

जमनी जिय वल्लभ जोति जगी। कुंज बेला जुही सु हिया अदगी॥
गुनकेलि गुलाल मनाल भुजा। कच लंबिन कोमल देह सुजा॥
छं०॥ २१॥

मधु माल तिमार सुमार सुषी। मुगधा मधु बेनि मयंक मुषी॥
चित चोप चंबेलिय चंप कली। सब सेवति स्वामिनि भांति भली॥
छं०॥ २२॥

धर माकर मानव नारंगियां। बलभा कलभा सुर सारंगियां॥
हरहासिय रासिय रूप जिती। निकसी करि बेन प्रमान तिती॥
छं०॥ २३॥

जितनी मिष स्वामिनि पास लही। तितनी भगरू सहु जाय कही॥
छं०॥ २४॥

झगरू कंचुकी का सब सामान ले जाकर पानीपत में गोठ का सामान रचना।

चौपाई॥ झगरू सांइ साज सब लई। सो पहुंचाय नीरपथ दई॥
बारी सघन वारि बहु जहां। बैठि गोठ विस्तारी तहां॥छं०॥२५॥

अग्नि कोण में रनिवास के डेरे लगना।

कवित्त॥ सीत भीत आदीत। बास अगनेब कोन किय॥
बगरि बारि बारिज्ज। जमि रहहि निसानिय॥
सुष लुट्टहि संजोग। जुवति जे भोन भोन सुष॥
विरह वियोगिनि अंग। अग्गि ज्वाला असंपि दुष॥
चकीय चक्क चिंता विषम। दिघघ रेंन दारुन दहै॥
जानै कि प्रान कै प्रान पति। आंनि कानि कासों कहै॥छं०॥२६॥

डेरों पर तैयारी हो चुकने पर पृथ्वीराज का रानियों सहित पानीपत की यात्रा करना।

दूहा॥ तिन रिति मन मृगया करिय। चढ़न कहत चहुआन॥
आगैं आगैं अंगनां। पानीपंथ मिलान॥ छं०॥ २७॥
एक मास क्रीड़ा अवधि। करिय संभरी नाथ॥
गोटि साज पहिलें पठय। चल्यौ रागिनी साथ॥ छं०॥ २८॥
सलष सुतादिक आदि दै। राज लोक लै सथ्थ॥
पूजि प्रिथा सगपन मिलै। चली सु पानीपथ्थ॥ छं०॥ २९॥
लाल ढाल सुषपाल महि। डोला रथ्थ रसाल॥
सावन सरित उमंडि ज्यौं। चलै चली त्यौं बाल॥ छं०॥ ३०॥

संपूर्ण समारोह के साथ रनिवास की यात्रा।

मोतीदाम॥ किती गज ढालन(१) बाल चढाइ। किती चक डोल अमोल बैठाइ॥
किती सुषपाल विसाल अरोहि। सुषासन आसन षासन सोहि॥
छं०॥ ३१॥

(१) ए. कृ. कौ.-बाज।

किती रलकी पलकि महि बैठि । किती मकना ढकना तून पैठि ॥
किती रथ पथ्थ चढी चलि मांन । मनों विबुधी अब रोहि विमांन॥
छं० ॥ ३२ ॥

चिहूं दिसि भासिय दासिय सथ्थ । गहै सब साज सिंगारनं बथ्थ॥
किती डिढडा बिड़ बाडिढ पाय । कुंपी इक कंध सुगंधनि ढाय॥
छं० ॥ ३३ ॥

डुरैं उर स्वामिनि ते चल चूक । चलै लहु आतुर सीस सिंदूक ॥
किती छर छग्गर कंध न लीन । चली हय हंकि लचै कटि छीन ॥
छं० ॥ ३४ ॥

झनभझनं झंझ नसद्द सुनंत । घनं घन घुघ्घर घोर गुनंत ॥
घनं घन कंकन बज्जि सुढार । गनं गैन धावत जात न पार ॥
छं० ॥ ३५ ॥

जगंम जगेव जराव वसंन । डगं मन जानि अरुन्न किरन्न ॥
सज्यौ मनु जज्ञि प्रजापति जाग । चल्यौ सुर नारिन कौ जनु माग ॥
छं० ॥ ३६ ॥

मनों मष मंडिय पंडव भूप । जुरे नर नारिन वृंद अनूप ॥
चल्यौ जलि पोजन कौ सथ संग । नही जिन कै सब अंग अनंग ॥
छं० ॥ ३७ ॥

लयौ कर कंचन लट्ठिय कट्ठ । उठौ भुकि क बहु बोलत तथ्थ ॥
चले तिन संग्ग चढे गुर राम । बड़े बपु वेस बड़े गुनधाम ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चले दिन दिघ्घन जे रजपूत । चले चढि साहि सिरोमनि सूत ॥
चले कुल कायथ चौदह जान । भयौ इतमाम करे जग कान ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सबैं सित उज्जल अंबर साजि । मनो निकले कल हंस विराज ॥
* * * * * * छं० ॥ ४० ॥

(१) मो.-झझ्झर । (२) ए. कृ. को.-भरे ।

रानियों का शिविर स्थान पर स्थानापन्न होना।

दूहा॥ जथ्थ मंडि झगरू करिय। तथ्थ गयौ रनवास॥
बाग बावरी बहु जहां। कूप ताल [१]पनिवास॥ छं० ॥ ४१॥
बारी में भारी बनिक। रच महल सुधराय॥
मनों सोभ कैलास की। लीनी लोभ [२]छिंडाय॥ छं० ॥ ४२॥
कहै रवनि प्रथिराज कौ। उर पुर धरि अनुराग॥
चलौ बिलौकैं चिहुं दिसा। पानि पंथ कौ बाग॥ छं० ॥ ४३॥

शिविरस्थान के उपवन की शोभा वर्णन।

भुजंगी॥ बनी सुभ्भ बारें फले [३]द्रुष्ष नेकं। रटैं बैठि पंषी सु भाषा अनेकं॥
ठटे अंब नीवू सु जंबूव रोसं। लुटैं भूमि [४]झूमी हरे हेरि होसं॥
छं० ॥ ४४॥
कहूं चंपकं चारु चेची चिनीयं। मनों दीपकं माल मनमध्य दीयं॥
कहूं नालि केलं रुवेलं बिदामं। सुकं सारिका टोलं बोलंत तामं॥
छं० ॥ ४५॥
कहूं [५]पक्क डारं अनारं दरक्की। कहूं सोभ सारं सु तारं तरक्की॥
कहूं कंछुहारी सुपारी निवारी। कहूं केवरा केतकी भीर भारी॥
छं० ॥ ४६॥
कहूं लाल जालं गुलालं सु पुंजं। कहूं जाति पंती भरं भोर गुंजं॥
करैं केलि में केलि मोरं चकोरं। कहूं कंकरन्नी करन्नाग ओरं॥
छं० ॥ ४७॥
फलैं फाल से फैलियं लौंग बल्ली। दलैं द्रुष्ष साषं सु दाषं प्रचल्ली॥
कहूं चंदनं कंदनं ताप तापं। जहां काम क्रीड़ा गहै बान चापं॥
छं० ॥ ४८॥
कहूं पंडुरं डार बैठे परेवा। कहूं बीज पूरी सिंदूरी करेवा॥
कहूं सारनी फेरिकै बारि ल्यावै। कहूं नाग वल्लीन [६]कूं नीर प्यावै॥
छं० ॥ ४९॥

(१) क्रो.कृ.-पतिवास। (२) ए. कृ. को.-छिनाय। (३) ए. कृ. को.-वृछ।
(४) मो झूमी। (५) मो.-कप्प। (६) मो.-कों।

कहूं घट्ट थट्टं रहट्टं चलावै। कहूं मालनी बाल माला बनावै॥
कहूं ढेंकुरी ढारि कै बारि काढै। कहूं थान उंचो सचै नीर बाढ़ै॥
छं० ॥ ५० ॥

दूहा ॥ चरस सरस ढरि ढेंकुरी। रहट बहत बसु जाम॥
वापी कूप तड़ाग तें। भरत चहवचा ताम॥ छं० ॥ ५१ ॥
इहि विधि सब रनिवास नें। सुष पायौ लषि बागु॥
जिन निरषिय तिन कहिय यों। आज हमारी भागु॥ छं० ॥ ५२ ॥
बाग लंघौ रनिवास वै। रानी आग्यौ लेय॥
पान पान अरु सेज सुष। मुष मनुहारि करेय॥ छं० ॥ ५३ ॥

रानियों के पानीपत पहुँच जाने पर पृथ्वीराज का कूच करना।

रानी पहुंचौ जानि कै। राजा चढ्यौ तुरंग॥
पायन पेलैं वाइज्यों। धायै न जायै कुरंग॥ छं० ॥ ५४ ॥
न्रपति चढे सब चढि चले। जे भरबंक बिरद्द॥
घर ढट्ठे अरि दल दलन। जे कट्टैं गजरद्द॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी और उनके साथी सामंतों का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढि चले अब्बुअ राव। सिर सेत छत्र सुभाव॥
कूरंभ पंभ चमून। जम रूप जानि जमून॥ छं० ॥ ५६ ॥
मुह अग्र मोरिय धीर। न्रिव्वान आनन नीर॥
चढ़ि चले चंपि चंदेल। हय मुक्कि मंडित षेल॥ छं० ॥ ५७ ॥
तिन सिद्धि संभरि वार। जग मझ्झ एक जुझार॥
उर साल साहि सहाब। मुष चंड मंडित काव॥ छं० ॥ ५८ ॥
लिय संग रंगह स्वान। इक इक्क संग द्वै ज्वानि॥
अन्नरोम के बहु रोम। इक मात तात न षोम॥ छं० ॥ ५९ ॥
मुष रत्त कोमल कान। द्रिग रत्त गति गुर रान॥
जोगिंद निंद सुभाय। म्रग धाय जाइ न पाय॥ छं० ॥ ६० ॥
पटकंत बाघ बराह। झटकंत रोझ अग्गाह॥
पट जरै जेब जराय। रज संकरन डुरवाय॥ छं० ॥ ६१ ॥
इक संकहो आरोह। इक पाखिकी प्रति सोह॥

रुथ सथ्य चीती वान। चष ढंकि पथ्थ पयान ॥ छं० ॥ ६२ ॥
जुर रारु बाज सिचान। तुरमती तेज उडान ॥
पिठका कुही चषं ढंकि। पुट चंच पदनष बंक ॥ छं० ॥ ६३ ॥
फ्रुनिं लै फंदैत कुरंग। जिन अंग सोभ सुरंग ॥
हुम संत हुंकत हेरि। दस कोस आवत फेरि ॥ छं० ॥ ६४ ॥
कवित्त ॥ पानी पंथल्ह राय। आय प्रेलत आषेटक ॥
फिरि पहार उज्जार। देषि बंधा आगेटक ॥
नै विहंड बन हंकि। संकि नव षंड मंड बर ॥
मूर ल्हर बाधंत। बाज छांडत छंडि बर ॥
वेधहिं बराह उच्छाह मन। तानि इक्क सर इक लहै ॥
पावै न जान सावज्ज अबर। ऐन सैन मिलै गहै ॥ छं० ॥ ६५ ॥
एक सत्त बाराह। बान बेंधे कि स्वान गहि ॥
सावज अवरन हंसि। नंस कीनौ म्रगादि महि ॥
पंछि पंछ पंछीन। मारि संघारि बहुत किय ॥
सु से स्रगाल को गिनै। छेद छिक्कार भार जिय ॥
बीभच्छ बीर रस रुद्र मचि। करुन कासु पिष्षी न मन ॥
पच्छलै जाम विश्राम कहु। फिर्यौ संग सामंत गन ॥ छं० ॥ ६६ ॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का मर्दन करवा कर यमुनाजी का स्नान करने जाना ।

हेरा न्रप आवंत। सुनंत रानीन सुष्य हुअ ॥
सपजि रहे सबं अन्न। धाय प्रथिराज सुद्धि दिय ॥
सुनि मरदन कौ हुकम। होत मरदनी बोलि लिय ॥
बय किसोर थन थोर। कच्छि अच्छरि समान चिय ॥
तिन नेह देह मलि देहु सुष। बरषि मेह श्रंगार रस ॥
जल जमुन उष्ण अस्नान करि। चल्यौ भूप संग विप्र दस ॥
छं० ॥ ६७ ॥

राजा का स्नान कर के गोदान करना ।

कासमीर करि तिलक। श्राद्ध तर्पन अंजुलि दिय ॥